अजायब बानी

मासिक पत्रिका फरवरी–2023

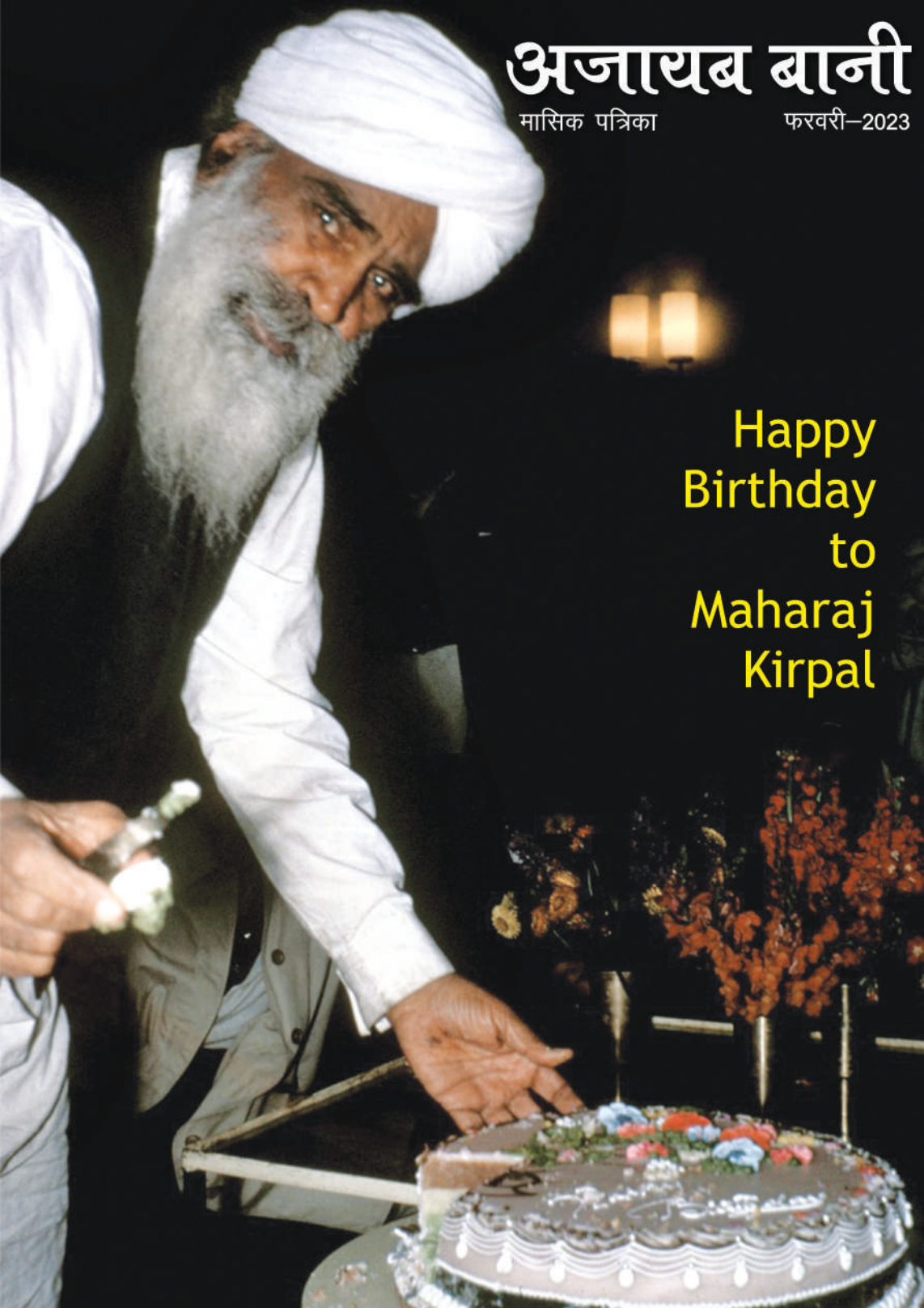

Happy Birthday to Maharaj Kirpal

RNI No - RAJHIN/2003/9899

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष–बीसवां | अंक–दसवां | फरवरी–2023

3 **यह जगत खेल तमाशा**
परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज के मुखारविंद से

9 **संगत**
सतसंग – परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

19 **गुरु का बच्चा**
प्रेमियों के सवालों के जवाब

32 **धन्य अजायब**
सतसंग के कार्यक्रमों की जानकारी

33 **भजन–माला** 2022
नये शब्द

प्रकाशक : **सन्तबानी आश्रम** 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039 जिला–श्री गंगानगर (राजस्थान)
संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** 99 50 55 66 71 80 79 08 46 01
विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया** 96 67 23 33 04 99 28 92 53 04
उप संपादक : **नन्दनी** सहयोग : **डॉ.सुखराम सिंह नौरिया**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 251 Website : www.ajaibbani.org
RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

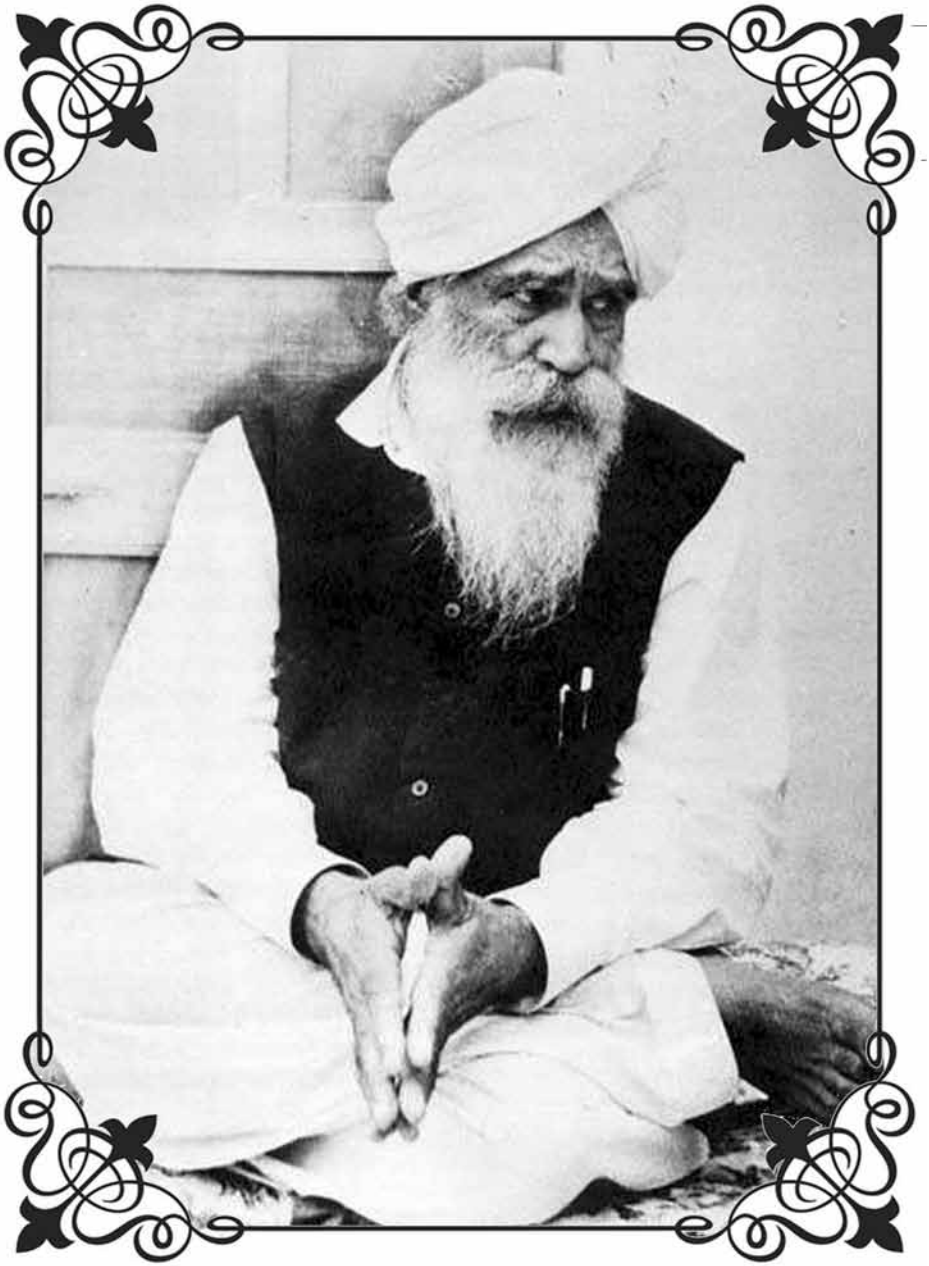

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज के मुखारविंद से

यह जगत खेल तमाशा

सन्त संसार को उसके रंगों में देखते हैं लेकिन हमने अभी वह आँख बनानी है, जिससे हम इस संसार और संसार के कारोबार की सही हालत देख सकें। सन्त आत्मा के स्तर से देखते हैं लेकिन हम शारीरिक स्तर से देखते हैं क्योंकि हम शरीर के साथ बँधे हुए हैं। हममें और सन्तों में यही फर्क है। सांसारिक लोग सोचते हैं कि शरीर और उसके सभी संबन्ध स्थाई हैं ज्यादातर लोग संसार को स्थाई समझते हैं और कहते हैंः

ऐह जग मित्ता अगला किन डित्ता।

जो लोग संसार को आत्मा के स्तर से देखते हैं वे कहते हैं कि ऐ संसार के लोगों, तुम क्या कर रहे हो? सन्त हमें कोई फिलोस्फी नहीं देते बल्कि वे सरल व सामान्य ज्ञान के तथ्य बताते हैं। संसार बहुत ही दुखी अवस्था में है। वे अनुमान लगाकर नहीं बोलते, वे बार–बार सच्चाई का होका देते हैं लेकिन न कोई सुनता है और न सुनने की परवाह करता है।

आत्मा को शरीर मिला है लेकिन शरीर आत्मा का मालिक नहीं है। परमात्मा ने यह शरीर हमें एक ऊँचे मकसद को पूरा करने के लिए दिया है। मकसद तो जीवन के रहस्य को सुलझाना है। हमने उस रचयिता को जानना है लेकिन इस लक्ष्य से पहले इंसान को अपने आपको जानना चाहिए। ऐसा हम किसी सन्त की संगत में जाकर ही कर सकते हैं।

जीवन दो हिस्सों का है, बाहरी और अंतरी। जो लोग केवल बाहरी पहलू में जीते हैं वे इसके उतार–चढ़ाव के रोजाना के तजुर्बों से गुजरते हुए भी इस संसार को सच मानते हैं हालाँकि यह स्पष्ट है कि यहाँ कोई भी व्यक्ति सुखी नहीं है। कबीर साहब कहते हैंः

तन धर सुखिया कोई न देखया, जो देखया सो दुखिया है

जो लोग हमेशा शरीर के स्तर पर सोचते हैं और शरीर का रूप बन जाते हैं, वे कभी भी सुखी नहीं हो सकते।

नानक दुखिया सभ संसार, सो सुखिया जो नाम आधार

संसार में वही सुखी हो सकता है जिसने जीवन के रहस्य को सुलझा लिया है। गुरु की संगत में रहकर ही इस रहस्य को सुलझाया जा सकता है कि हम इतना दुःख क्यों भोग रहे हैं और कैसे सुखी हो सकते हैं?

सुखी सन्त का दास

सन्त सच्ची खुशी का आनन्द उठाते हैं जबकि बाकी सब गहरे दुःख में हैं। गुरु की संगत में जाकर ही परमात्मा का नाम याद आता है। परमात्मा हमारी बुद्धि को अपनी ओर या उसकी ओर ले जाए जिसमें परमात्मा प्रकट है। रहनुमाई से ही बुद्धि बिना गलती किए उस मार्ग में काम कर सकती है। मन को बुद्धि के पीछे चलना चाहिए और ज्ञानेन्द्रियों को मन की दिशा में चलना चाहिए।

हर ज्ञानेन्द्री इंसान के काबू में होनी चाहिए और उसके आत्मसंयम के अनुसार काम करती होनी चाहिए। अभी हमारे अस्तित्व की मशीनरी उल्टी चल रही है बाहरी भोग ज्ञानेन्द्रियों को खींच रहे हैं, ज्ञानेन्द्रियाँ मन को घसीट रही हैं, मन बुद्धि को ले जा रहा है यही सब दुःखों का कारण है।

हम आत्मा हैं, हम चेतन हस्ती हैं। सन्त हमें बार–बार समझाते हैं कि ओ आत्मा, तुम पूर्ण चेतनता का हिस्सा हो लेकिन मन का साथ लेकर इन्द्रियों के भोग में फँसकर अपनी सच्ची और कुलीन शख्सियत को भूल गई हो, शरीर का रूप और इस संसार का रूप बन गई हो।

आप भुलक्कड़पन में इतने गिर गए हैं कि आपको अपना पालनहार भी याद नहीं आता, यही दुःखों का कारण है। हमारी बुद्धि उंगलियों के इशारों पर काम करती है अगर हमारा मन, बुद्धि की बात सुने और उसे

माने तो बुद्धि उसे सही दिशा दिखाएगी। कई बार बुद्धि स्पष्ट चेतावनी देती है लेकिन मन नहीं सुनता तो बुद्धि चुप हो जाती है।

इसलिए अक्सर कहा जाता है कि अंतरात्मा की आवाज को सुनें, वह आपको सही दिशा दिखाती है अगर आप कोई गलत काम कर रहे हैं तो बुद्धि आपको बताएगी और आप गलत कर्म से बच जाएंगे। बुरे से बुरे आदमी में भी अंतरात्मा होती है अगर हम बुद्धि के सुझावों पर अमल करें तो सब कुछ काबू में रहेगा और हम सुखी अवस्था का आनन्द लेंगे। सन्त का सेवक इसलिए सुखी है क्योंकि उसका घोड़ा, गाड़ी को खींच रहा है।

सारा संसार बाहरी जादू के नशे में मस्त है लेकिन जब सन्त संसार में आते हैं वे हमें समझाते हैं कि यह शरीर हमारा पहला साथी है और इस शरीर के साथ इन्द्रियाँ भी हैं। ओ मेरे मन, जब से तू इस संसार में आया है तुमने कैसे कर्म किए हैं? इस जन्म में परमात्मा से मिलने की बारी थी लेकिन तुमने अपने शारीरिक जीवन से क्या किया?

मानव स्वरूप सभी जीवों से ऊँचा है, यह वह स्वरूप है जिसमें परमात्मा को पाया जा सकता है। यह वह स्वरुप है जो आत्मा को बड़े ऊँचे भाग्य से मिलता है यहाँ तक कि देवी–देवता भी इंसान के रूप में जन्म लेने के लिए तरसते हैं। आपने एक बार भी अपने बनाने वाले के बारे में नहीं सोचा। क्या कोई मशीन है जो माँ के गर्भ में शरीर को बनाती है? कुत्ते का बच्चा कुत्ते की छवि में पैदा होता है और इंसान का बच्चा इंसान के स्वरूप में पैदा होता है।

यह सब आकृतियाँ कौन बनाता है? हम अपने बनाने वाले को जानने की कोशिश नहीं करते। सन्त उपदेश करते हैं कि आप एक सुनहरी मौके के साथ आए हैं, अब आपकी परमात्मा से मिलने की बारी है लेकिन आपने अभी यह काम नहीं किया। सन्त इन्द्रियों से भी कहते हैंः

ओ मेरी आँखों, परमात्मा ने तुम्हारे अंदर ज्योति रखी है, परमात्मा के अलावा किसी और को न देखो। परमात्मा की बख्शी हुई नजर से परमात्मा को सबमें देखो।

ओ मेरे कान, परमात्मा ने तुम्हें इस शरीर के साथ लगाया है, आकाश से आता हुआ संगीत सुनो, यह संगीत चारों युगों में गूँजा है, इसे सच्चे परमात्मा ने सुनाया है।

ओ मेरी जुबान, बेस्वाद वस्तुओं का स्वाद लेने वाली, तुम्हारी प्यास कभी नहीं बुझेगी। तुम्हें अमरता के अमृत को चखना चाहिए लेकिन तुम संसार के कमतर स्वादों से बंधी हुई हो।

केवल सन्त के जरिए ही समझ मिल सकती है क्योंकि सन्त हर वस्तु को आत्मा के स्तर से देखते हैं। सन्त किनारे पर खड़े होकर संसार के दृश्य का मुआयना करते हैं। जब तक आत्मा शरीर के अंदर होती है तब तक शरीर को मान मिलता है, लोग खुशी से मिलते हैं। जब तक वह मित्र परमात्मा अंदर रहता है उसमें आत्मा बसती है। जब आत्मा साथ छोड़ जाती है तो यहाँ केवल राख बचती है।

इंसान शरीर के बारे में बहुत कुछ जानता है कि इसका इलाज कैसे करना है। इंसान ने बुद्धि के जरिए बहुत उपलब्धियाँ हासिल की हैं। रेडियो, टेलिविजन के जरिए हजारों मील से भी लोगों को सुना व देखा जा सकता है। कुछ ही घंटो में धरती का चक्कर लगाया जा सकता है। इन सब उपलब्धियों के होते हुए भी क्या इंसान खुश है?

मानवता ने एक समझ के स्तर पर इंसान के शारीरिक और बौद्धिक पहलुओं पर अधिकतर ज्ञान हासिल कर लिया है लेकिन इसके होते हुए भी इंसान मूर्ख है। सही समझ के बिना इंसान मूर्ख है। अनंत जीवन किसी सन्त की संगत में बैठकर ही जीया जा सकता है। यह किसी पढ़े–लिखे, बुद्धिजीवी, ग्रंथों के पढ़ने या प्रचार करने वालों से नहीं मिल सकता।

अगर एक सिद्ध आत्मा पढ़ा–लिखा है तो वह विभिन्न ढ़ग से विषय को समझाएगा। अगर वह अनपढ़ और बिना सांसारिक शिक्षा के है तो वह सच्चाई को सहज ज्ञान से उदाहरणों के द्वारा समझाएगा।

जब बुल्लेशाह, शाह इनायत के पास गए तो उन्होंने शाह इनायत से पूछा, ''परमात्मा को कैसे पा सकते हैं?'' शाह इनायत ने जवाब दिया, ''इसमें क्या है? बस, यहाँ सिमटाव करो और वहाँ जुड़ जाओ।'' यह तवज्जो को दिशा–निर्देश देने का और इन्द्रियों के स्तर से सिमटाव करने का मामला है।

जागरूकता अपने आप आ जाएगी। परमात्मा को जानना सांसारिक ज्ञान को हासिल करने जैसा मुश्किल नहीं क्योंकि सांसारिक ज्ञान के लिए अनुमान लगाने की जरूरत होती है लेकिन परमात्मा को जानने के लिए अपने आपको परखना होता है। यह वाक्य ही बहुत सरल है लेकिन हमारे जीवन व गहरे भुलक्कड़पन की वजह से सब कुछ उलट–पुलट है। यह घूमता हुआ पहिया उल्टा चल रहा है। ***

सावन गले लगाकर

सावन गले लगाकर, बाहों का हार डालो,
शैदा बना के अपना, उल्फ़त में मार डालो x 2 *सावन गले.....*

1 *आँखों में बस रहे हो, घर दिल में कर चुके हो, x 2*
अब तो हया का पर्दा, रुख से उतार डालो, *सावन गले.....*

2 *मजनूं की कब्र पर ये, कुत्बा लगा हुआ था, x 2*
नाम–ए–वफा पे सब कुछ, तन–मन भी वार डालो, *सावन गले.....*

3 *उल्फ़त में हाय अब तो, इक जान बच रही है, x 2*
उसको भी ए 'जमाल' अब, बाज़ी में हार डालो, *सावन गले.....*

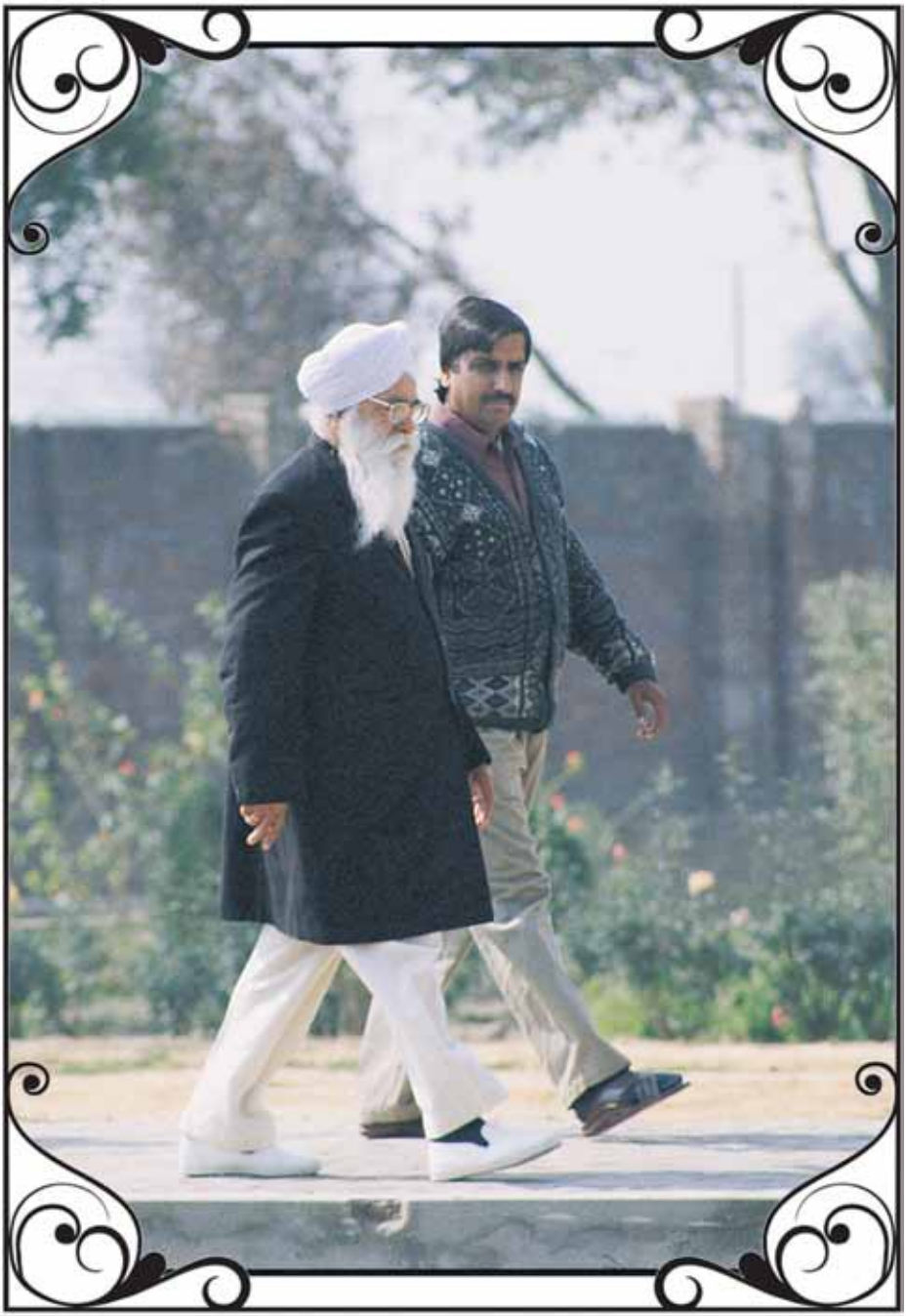

सतसंग–परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

संगत

DVD 567 (4)

04 जून 1994 पलटू साहब की बानी घाना, साऊथ अफ्रीका

गुरुदेव परमात्मा सावन–कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने इस गरीब आत्मा पर दया–मेहर की, तपती हुई आत्मा पर नाम के छींटे मारकर शान्ति बख्शी। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

फिरत फिरत प्रभ आइया परया तउ सरनाइ
नानक की प्रभ बेनती अपनी भगती लाइ

आप प्यार से कहते हैं कि पता नहीं मैं कितनी योनियों में फिरता रहा हूँ कितनी बार इंसान या हैवान बना, कितनी बार कीड़ा बनकर रेंगता रहा। आज मैं तेरे दर पर आया हूँ, तूने दया करके इंसान का जामा बख्शा है, तू मुझे अपनी भक्ति और प्यार का दान दे।

परमात्मा कृपाल सदा ही कहते रहे, ''भूखे को रोटी प्यासे को पानी कुदरत का असूल है जरूर मिलता है।'' जब हमारे दिल में भी सच्ची तड़प, सच्चा प्यार उछलता है तो हमारे दिल से सच्ची फरियाद निकलती है जिसे परमात्मा जरूर सुनता है। वह आज तक अपनी आत्माओं की आवाज सुनता आया है आगे भी सच्ची आत्माओं की आवाज सुनता रहेगा।

सन्त–महात्मा मालिक के हुक्म में हम भूले हुए जीवों को परमात्मा की भक्ति का ज्ञान करवाने के लिए आते हैं। वे हमें मालिक के साथ जोड़ने के लिए आते हैं लेकिन हम दुनियादार जीव उन पर भरोसा नहीं करते अगर करते भी हैं तो उनके बताए हुए रास्ते पर नहीं चलते। दुनियादार विषय–विकारों की खुराक खाते हैं, नाम की खुराक इन्हें अच्छी नहीं लगती ये नाम की खुराक खाते हुए डरते हैं।

सन्त–महात्मा पारस होते हैं। पारस वह वस्तु है जो लोहे से लग जाए तो लोहे को सोना बना देती है लेकिन हम जीव उस लोहे जैसे भी नहीं हैं। हम मनूर जैसे हैं, लोहे की मैल को मनूर कहते हैं। सन्त–महात्मा चंदन की महक की तरह होते हैं लेकिन हम दुनियादार लोग बाँस की तरह होते हैं, हम उस महक को अपने अंदर जज्ब नहीं होने देते।

महाराज सावन सिंह जी बताया करते थे कि अप्रैल का महीना था, हम पहाड़ की चढ़ाई चढ़ रहे थे यकायक दिल के अंदर खुशी महसूस होने लगी। दिल में ख्याल आया कि कोई तरक्की होने वाली भी नहीं, कोई बाल–बच्चे की खुशी होने वाली भी नहीं फिर यह किस बात की खुशी है, किस बात की महक है? हम जैसे–जैसे आगे चलते गए वह महक बढती गई। आगे जाकर देखा एक मस्ताना फकीर बैठा था। पहलवान को पहलवान पहचान लेता है, आँख को आँख पहचान लेती है। फकीर को फकीर बहुत प्यार से समझ लेता है। महक लेने वाला भी कोई–कोई नाक होता है फिर पता लगा कि यह महक इस फकीर में से ही आ रही है।

पलटू साहब अयोध्या में हुए हैं, आम धारणा है कि अयोध्या रामचन्द्र जी की नगरी है। पलटू साहब के समय में वह पुरानी शान तो खत्म हो चुकी थी लेकिन तीर्थ स्थान होने की वजह से लोग वहाँ जाते थे। वहाँ पंडे पूजा–पाठ, जप–तप के बहाने लोगों से खूब पैसा बटोर रहे थे। ऐसी जगह पर नाम का प्रचार करना आसान नहीं होता। पलटू साहब ने अयोध्या नगरी में बैठकर 'शब्द–नाम' का प्रचार खुले दिल से किया।

उस समय हिन्दू–मुसलमान दो ही फिरके ज्यादा मशहूर थे, दोनों फिरके पलटू साहब के पास आने लगे। उस इलाके में इनका इतना प्रभाव हुआ कि कई पुजारियों ने भी इनसे नामदान लिया। जब सच्चाई प्रकट हो जाती है, जिन लोगों की पाखंड की दुकान होती है उन लोगों को घाटा पड़ने लगता है तो वे लोग सन्त–महात्माओं की निन्दा करने लगते हैं।

किसी जगह इतिहास यह नहीं कहता कि सन्त–महात्माओं ने भी किसी की निन्दा की। सन्तों का विशाल हृदय होता है। वे न खुद निन्दा करते हैं और न ही अपने सेवकों को निन्दा करने की इजाजत देते हैं। इतिहासकार, राजा–महाराजाओं का इतिहास लिखने में तो रूचि रखते हैं, उनका आगा–पीछा पड़ताल करके उनके बारे में सबकुछ लिखते हैं लेकिन सन्तों के बारे में लिखने में इतिहासकारों की कोई रूचि नहीं होती अगर किसी ने किसी सन्त का जिक्र भी किया है तो सही ढंग से नहीं किया।

पलटू साहब के बारे में पूरी जानकारी तो नहीं मिलती कि इनका पहला नाम क्या था? इनकी बानी से यह जरूर पता लगता है कि इनके गुरु ने इनका नाम पलटू रखा था। जब आप मन–इन्द्रियों की गुलामी से आजाद हो गए, संसार की तरफ से हटकर पूरी तरह शब्द के साथ जुड़ गए, अपने अंदर गुरु को प्रकट कर लिया तब इनके गुरुदेव ने खुश होकर कहा कि यह दुनिया की तरफ से पलटकर परमात्मा की तरफ लग चुका है, इनके गुरु ने खुश होकर इनका नाम पलटू रख दिया।

पलटू साहब ने परमात्मा की और सन्तों की बहुत महिमा गाई है। आपने जिस तरह परमात्मा को अगम, अगोचर, अलख कहा है उसी तरह सन्तों को भी अगम, अगोचर, अलख कहा है। परमात्मा और सन्त में कोई भेद नहीं रखा। वे कहते हैं कि सन्त और राम में कोई भेद नहीं, जो उन्हें अलग–अलग समझता है वह बड़ी भारी गलती में है।

सब सन्तों ने सतसंग पर बहुत जोर दिया है कि हमें सतसंग के बिना समझ नहीं आती। हमने बुरी संगत से बचना है और नेक **संगत** में जाना है अगर हम शराबी–कबाबियों की संगत में जाते हैं तो हम भी शराब–कबाब खाने–पीने लग जाते हैं। जुआ खेलने वालों की **संगत** में जाते हैं तो जुआ खेलने की आदत पड़ जाती है। चोरी करने वालों की संगत में जाते हैं तो चोरी करने की आदत पड़ जाती है। जब हम सन्त–महात्माओं, नाम जपने

वालों की **संगत** में जाते हैं तो हमारे अंदर भी नाम जपने की आदत बन जाती है, स्वभाव बन जाता है। हम भी बुरे कर्म करना छोड़ देते हैं एक दिन दरवेश–पूरे फकीर बन जाते हैं। स्वामी जी महाराज कहते हैंः

बिन सतसंग बूझ न पाई, भाग बिना सतसंग न थ्याई।

सतसंग के बिना समझ नहीं आती, ऊँचे भाग्य हों तभी हमें सतसंग मिलता है। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि सन्तों का यह मकसद नहीं होता कि जीवों को अभ्यास में लगाएं कि ये सारी जिदंगी कोल्हु के बैल की तरह चक्कर लगाते रहें। जब हम जीव 'शब्द–नाम' की कमाई नहीं करते, तन–मन से सच्चाई को देखना नहीं चाहते तो सन्त–महात्मा हमें संसारी लेवल पर कहानियाँ सुनाते हैं कि ये जीव किसी न किसी तरीके से इन कहानियों के मुताबिक अपने जीवन को ढालें और ये भी लोहे से सोना बन जाएं। आपके आगे पलटू साहब की बानी रखी जा रही है। गौर से सुनेंः

मलया के परसंग से सीतल होवत साँप।।
सीतल होवत साँप ताप को तुरत बुझाई।
संगत के परभाव सीतलता वा में आई।।

पलटू साहब कहते हैं कि साँप में जहर होती है, जो भी साँप के संपर्क में आता है साँप जहर निकालने के लिए उसे डंक मारता है। जहर गर्म होती है, साँप तपता है अगर साँप को चंदन का पेड़ मिल जाता है तो वह उस पेड़ के साथ लिपट जाता है। चंदन ठंडा होता है चंदन के साथ लगने से साँप के अंदर ठंडक आ जाती है, शान्ति आ जाती है।

इंसान के अंदर पाँच किस्म की जहर है, काम की जहर इंसान को बेहाल कर देती है हालाँकि पता है कि यह बुराई है लेकिन इंसान इस जहर से बच नहीं सकता। क्रोध की जहर की वजह से भाई–भाई का सिर गाजर–मूली की तरह काट देता है। एक मुल्क दूसरे मुल्क पर हमला

करने के लिए तैयार रहता है। एक समाज दूसरे समाज को बुरा समझता है। लोभ की जहर होने पर हम अपना हक नहीं पहचानते और हर वस्तु को अपना बनाना चाहते हैं। इसी तरह मोह से बँधा हुआ जीव माँस के लोथड़े से ज्यादा नहीं होता। अहंकारी आदमी यह सोचता है कि मेरे जैसा कोई है ही नहीं, ये सारी जहरें हैं। हमने इन जहरों को कैसे दूर करना है?

जिस तरह चंदन का पेड़, सर्प की जहर की तपिश को बुझा देता है शान्ति बख्श देता है इसी तरह जब हम सन्तों की सोहबत–**संगत** में जाते हैं, सन्तों के नाम को अपने अंदर प्रकट कर लेते हैं तो हमारे अंदर काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार की जितनी भी तपिश हैं ये सारी शान्त हो जाती हैं, फिर हमें ये तपिश मालूम नहीं होती।

मूरख ज्ञानी होय जाय ज्ञानी में बैठै।

अब पलटू साहब प्यार से कहते हैं, ''हम मूर्ख, मुग्ध, गँवार हैं हमें कोई समझ नहीं। सन्त–महात्मा पढ़े–लिखे को ज्ञानी नहीं कहते। ज्ञानी वह है जो अपनी आत्मा से स्थूल, सूक्ष्म और कारण के तीनों पर्दे उतारकर ब्रह्म को पार करके पारब्रह्म में चला जाता है।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

गिआन धिआन धुन जाणीऐ अकथ कहावै सोइ।

मेरे दिल में भी यह ख्याल था कि शायद! कालेज में जाकर ज्ञानी पास करने से शान्ति आ जाएगी। मैंने आर्मी में रहते हुए बहुत मेहनत करके हिन्दुस्तान के कानून के मुताबिक ज्ञानी पास की। अहंकार जरूर आया कि मैं ज्ञानी पास हूँ लेकिन शान्ति नहीं थी। शान्ति, परमात्मा कृपाल के चरणों में माथा टेककर ही आई। मैंने अपनी जिंदगी में देखा है कि जिन्होंने ज्ञानी पास की, उन दिनों में और आज भी वे शराब भी पीते हैं और मीट भी खाते हैं। कबीर साहब कहते हैंः

काम क्रोध मद लोभ की, जब लग घट में खान।
कहा मूरख कह पंडिता, दोनों एक समान।।

चाहे आप ज्ञानी पास कर लें, चाहे चारों वेद पढ़ लें, चाहे संसार में जो भी शास्त्र रचे गए हैं उनका अच्छी तरह विचार कर लें अगर आपके अंदर जरा भी काम की बदबू है तो पंडित और मूर्ख में कोई फर्क नहीं। सन्त–सतगुरु सतसंगियों को वह रास्ता बता देते हैं जो सारे ग्रंथों का सार होता है। कबीर साहब कहते हैंः

गुर दिखलाई मोरी, जित मिरग पड़त है चोरी।
मूँद लीए दरवाजे, वाजीअले अनहद बाजे।।

जहाँ पाँचो मिरग चोरी से हमारी रूहानियत की पूँजी लूटते हैं, मोरी बता देता है कि ये मिरग यहाँ से आते हैं। जब हम आत्मा को नौं दरवाजों में से निकालकर आँखों के पीछे एकाग्र कर लेते हैं तो नौं दरवाजों से हमारा ताल्लुक खत्म हो जाता है और हम अंदर 'शब्द' के साथ जुड़ जाते हैं।

फूल अलग का अलग बासना तिल में पैठे।।

पलटू साहब फूल की मिसाल देते हैं जिस तरह फूल की महक पास लगे तिल के बूटे में जाकर समा जाती है उसी तरह मालिक के प्यारों के अंदर नाम की महक होती है। उनके रोम–रोम से नाम की किरणें निकलती हैं, जो लोग मालिक के प्यारों की सोहबत में आते हैं उनके ऊपर भी **संगत** का असर होता है और वे उस असर की वजह से महक उठते हैं।

कंचन लोहा होय जहाँ पारस छुइ जाई।

हमें पता है कि लोहा, सोने के मुकाबले बहुत सस्ता बिकता है अगर पारस लोहे को छू जाए तो वह लोहा भी सोना बन जाता है। इसी तरह चाहे हमने कितने भी बुरे कर्म किए हों लेकिन जब हम सन्तों की **संगत** में जाते हैं तो उनकी दया और कृपा से हम भी सन्त बन जाते हैं, उनके पीछे हम भी बख्शे जाते हैं। मैं सदा ही कहा करता हूँः

किसे काम का थे नहीं कोई न कौडी दे।
कृपाल सिंह सतगुरु मिलया भई अमोलक देह।।

पनपै उकठा काठ जहाँ उन सरदी पाई।।

कटे हुए गन्ने को जब सर्दी की ठंडक मिलती है तो वह भी उग जाता है। इसी तरह बेशक हमने भूल से भी अपने मुँह से परमात्मा का नाम न लिया हो लेकिन **संगत** के प्रभाव की वजह से हम भी 'शब्द–नाम' की कमाई करने लग जाते हैं, नाम की कमाई में मस्त हो जाते हैं।

पलटू संगत किये से मिटते तीनिउँ ताप।
मलया के परसंग से सीतल होवत साँप।।

पलटू साहब कहते हैं, ''अगर हम भूले–भटके सन्तों की **संगत** में जाते हैं, नाम की कमाई करते हैं तो हमारी आत्मा पर चढ़े हुए आध्यात्मिक, मानसिक और शारीरिक तीनों ताप उतर जाते हैं।''

चंदन के परसंग चंदन भई बन की लकरी।।
जैसे तिल का तेल फूल संग महँग बिकाई।

जैसे पारस का संग करके लोहा महँगा बिक जाता है, उसी तरह फूल की संगत करके तेल का नाम इत्र पड़ जाता है तो वह महँगा बिक जाता है।

सतसंगति में पड़ा संत भा सधन कसाई।।

अब पलटू साहब एक बहुत मशहूर मिसाल देकर समझाते हैं कि हिन्दुस्तान में एक सधना कसाई हुआ है। वह रोज बकरे काटकर बेचता था और सन्तों की **संगत–सोहबत** में भी जाता था। एक दिन उसने कसाई का काम छोड़कर भक्ति इख्तियार कर ली और सन्त बन गया। सधना के इतिहास में आता है कि राजा ने सधना कसाई के पास किसी को माँस लेने के लिए भेजा।

सधना कसाई के दिल में ख्याल आया कि गर्मी के दिन है अगर मैं सारे बकरे को काटूँगा तो माँस खराब हो जाएगा। सधना बकरे का गुप्त अंग काटने लगा तो बकरा कह–कहाकर हँसा। सधना ने बकरे से हँसने

का कारण पूछा तो बकरे ने कहा, ''कई बार तूने मेरा सिर काटा है और कई बार मैंने तेरा सिर काटा है, अब तू यह नया कर्म बना रहा है, जिस तरह मैं आठ पहर तड़पूंगा उसी तरह तुझे भी तड़पना पड़ेगा।'' यह बात सुनकर सधना कसाई के दिल को चोट लगी।

जब सधना कसाई भक्ति करने के लिए घर से निकला तो उसकी उम्र जवान थी। हमें पता है कि काल अपना पूरा जोर लगाता है। सधना ने जिस घर में रात काटी उस घर की स्त्री सधना कसाई के ऊपर मोहित हो गई, सधना ने उसे मना कर दिया। उस स्त्री ने सोचा शायद यह मेरे पति से डरता है उसने अपने काम की तपिश को दूर करने के लिए तलवार से अपने पति का सिर काटकर सधना के आगे रख दिया कि मेरा पति हमारे बीच रूकावट था मैंने इसे दूर कर दिया है। सधना कसाई फिर भी नहीं माना। आखिर उस औरत ने शोर मचा दिया कि इस नौजवान को हमने अपने घर में रहने की इजाजत दी और इसने मेरे पति का कत्ल कर दिया।

उन दिनों में सजाएं बहुत कठोर होती थी, सधना के हाथ काट दिए गए। उस वक्त सधना ने परमात्मा के आगे प्रार्थना की, ''हे प्रभु, जिस तरह किसी ने राजा की कन्या से शादी करने के लिए भेष धारण कर लिया था, तूने उसकी भी लाज रखी। अगर गीदड़ों से ही डरना है तो शेर की शरण में आने का क्या फायदा? तू जगत गुरु है, परमात्मा रूप है, मैं तेरी शरण में आया हूँ। मैं कौडी का भी नहीं था, मैं पापी था, मैं पाप का त्याग करके तेरी शरण में आया हूँ, तू मेरी लाज रख।''

सधना कसाई का शब्द गुरु ग्रंथ साहब में भी आता है, आप परमगति को प्राप्त थे। हमने देखा है कि महाराज सावन सिंह जी की संगत में आकर कई कसाई, अपना कसाई का काम छोड़ गए। इसी तरह परमात्मा कृपाल की शरण में भी कई कसाई अपना कसाई का काम छोड़कर नाम की कमाई करने लगे। पप्पू, गुरमेल जानते हैं कि एक कसाई हमारी संगत में भी आया वह भी कसाई का काम छोड़कर आलू–छोले बेचकर अपना

गुजारा करता है। उसे अपना यह काम छोड़ने में टाईम तो जरूर लगा लेकिन अब वह 'शब्द–नाम' की कमाई करके अच्छे इंसान की तरह जिंदगी व्यतीत कर रहा है।

पलटू साहब के समझाने का भाव यह है कि हमें बुरी संगत से बचना चाहिए, सन्त–महात्माओं की **संगत** में जाना चाहिए। सन्त–महात्माओं की संगत में जाकर हमारी आत्मा निर्मल होती है, बुद्धि पवित्र होती है।

गंग में है सुभगंग मिली जो नारा सोती।
सीप बीच जो पड़ै बूँद सो होवै मोती।।

हिन्दुस्तान में लोग गंगा के स्नान को पवित्र कहते हैं। जैसे छोटी–छोटी नदियाँ गंगा में जाकर गिरती हैं वे भी गंगा ही कहलाती हैं। बारिश की स्वाति बूँद अगर साँप के मुँह में पड़ जाती है तो जहर बन जाती है। सीपी के मुँह में गिरती है तो मोती पैदा हो जाता है, यह **संगत** का ही फल है।

पलटू हरि के नाम से गनिका चढ़ी बिमान।
पारस के परसंग से लोहा महँग बिकान।।

पलटू साहब ने सतसंग के बारे में अच्छी तरह समझा दिया है। सतसंगियों को सदा ही बुरी **संगत** से बचने की कोशिश करनी चाहिए, नेक संगत में जाना चाहिए। हमें महाराज कृपाल कुलमालिक का वचन याद रखना चाहिए कि सौ काम छोड़कर सतसंग में जाना है, हजार काम छोड़कर भजन–अभ्यास में बैठना है। आप उस समय तक शरीर को खाना न दें जब तक आत्मा को खुराक नहीं दे लेते। तन की खुराक अन्न है आत्मा की खुराक शब्द–नाम की कमाई है। हमारी आत्मा जन्म–जन्मांतर से कमजोर है, भूखी है। हमारी तवज्जो इसकी खुराक की तरफ नहीं जाती।

हमने सदा सतसंग में हाजिरी लगानी है 'शब्द–नाम' की कमाई करके अपने जीवन को सफल बनाना है। ***

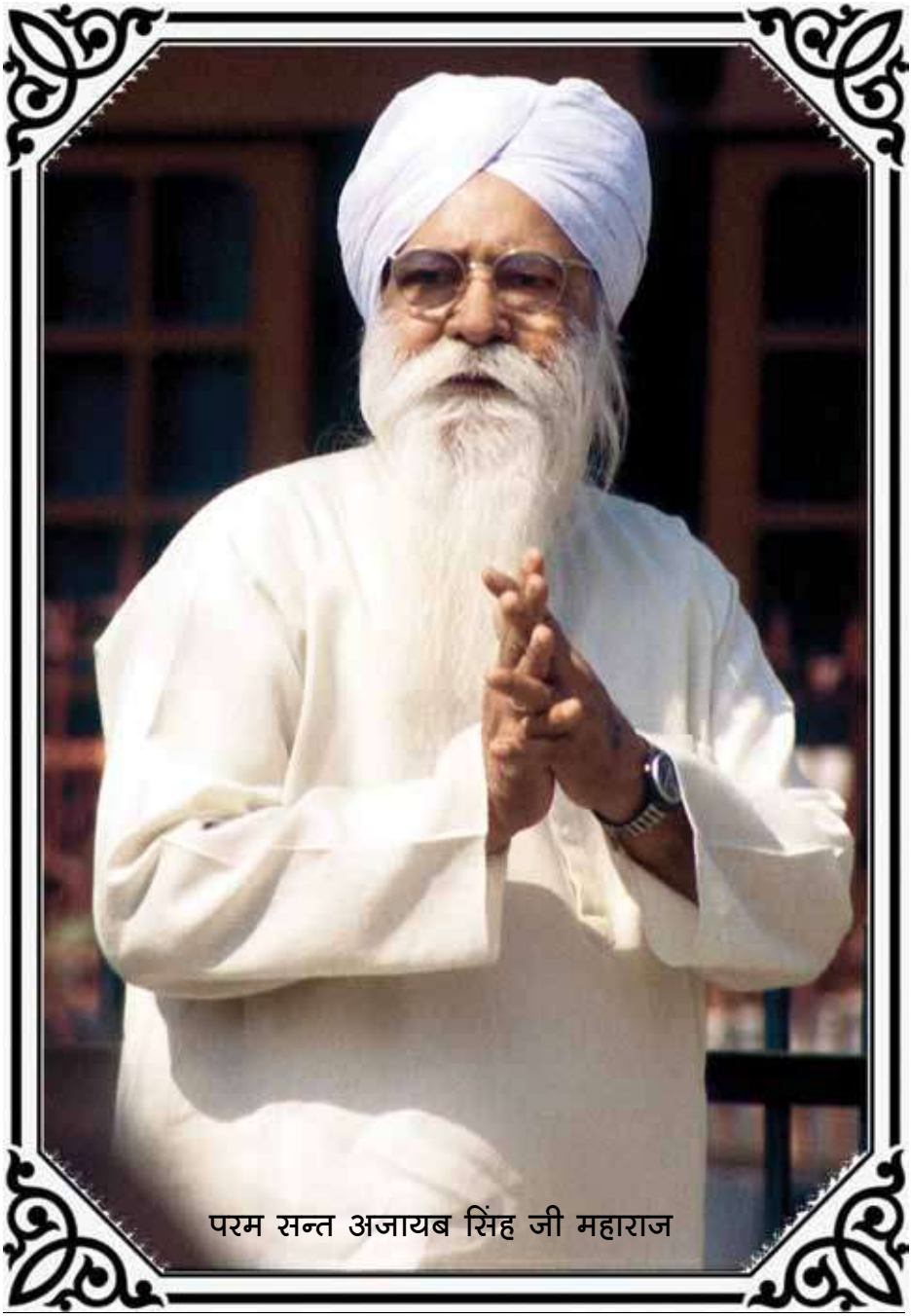

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

गुरु का बच्चा

13 दिसम्बर 1995 साँपला, हरियाणा

परमपिता परमात्मा सावन–कृपाल के चरणों में नमस्कार है, जिन्होंने हमें अपनी भक्ति करने का मौका दिया है। कबीर साहब कहते हैंः

गुरु को सिर पर राखिये, चलिये आज्ञा माहिं।
कहै कबीर तो दास को, तीन लोक डर नाहिं।।

जो शिष्य हमेशा गुरु को अपने सिर पर रखता है, गुरु का कहना मानता है उसे त्रिलोकी तक काल की कोई ताकत रोक नहीं सकती, विघ्न नहीं डाल सकती। उसके सिर के ऊपर गुरु का हाथ होता है। जब हम शरीर की चेतना से ऊपर उठकर आँखों के पीछे आते हैं, शब्द रूप गुरु को अपने अंदर प्रकट कर लेते हैं तो वहाँ सेवक की ड्यूटी खत्म हो जाती है। जब सेवक वहाँ पहुँच जाता है तो बाहर भी गुरु परछाई की तरह हमारे साथ रहता है फिर गुरु हमें एक पल के लिए भी अकेला नहीं छोड़ता।

***एक प्रेमी**: गुरु का बच्चा बनने के लिए क्या करना चाहिए?*

बाबा जी: यह बहुत ही दिलचस्प सवाल है, इस सवाल को सुनकर मेरा चेहरा ही नहीं हँस रहा बल्कि दिल भी बहुत खुश है। इस सवाल के बारे में मैं आपको बहुत कुछ कह सकता हूँ लेकिन मैं आपको अपने अनुभव के मुताबिक ही कुछ शब्द कहूँगा। **गुरु का बच्चा** बनने के लिए हमें अपनी चतुराई और ऐब छोड़ने होंगे।

गुरु का बच्चा बनने के लिए एम.ए. पास को चालीस दिन के बच्चे जैसा बनना पड़ता है। तन भी सच्चा हो मन भी सच्चा हो उस सच्चाई का हमारे भोलेपन पर बहुत असर पड़ता है। सच तो यह है कि ऐसे ख्याल बचपन से ही बने होते हैं कि मुझे कोई सच्चा पिता मिले जो मुझे अपनी

गोद में लेकर वह प्यार दे जो अटूट है। वह प्यार खेतों में नहीं उगता और बाजार में नहीं मिलता।

इस बारे में मैंने आपको पहले कई बार बताया है, एक बार फिर आपको याद करवा रहा हूँ कि अपने अनुभव के बारे में बताना ही अच्छा होता है। मैंने सच्चे दिल से उसे अपना पिता और उसने मुझे अपना बच्चा मान लिया। मेरे प्यारे सतगुरु पच्चीस साल तक यही कहते रहे, ''परमात्मा को पाना मुश्किल नहीं, इंसान का बनना मुश्किल है क्योंकि परमात्मा इंसान की तलाश में है।''

परमपिता परमात्मा ने सभी आत्माओं का लेखा–जोखा अपने हाथ में रखा हुआ है। परमात्मा खुद ही फैसला करता है कि यह आत्मा इस जन्म में गुरु के पास आएगी या नहीं? इसे नामदान मिलेगा या नहीं? नामदान मिलने के बाद इसे गुरु पर विश्वास आएगा या नहीं? यह आत्मा भजन–अभ्यास करेगी या नहीं? यह आत्मा एक ही जन्म में अपनी सारी अवस्था पूरी करके सच्चखंड पहुँच सकेगी या नहीं? या इससे और भी जीवों को नामदान दिलवाया जाएगा, इसके जिम्मे जीवों को तारने का बहुत बड़ा काम लगाया जाएगा या इसे अपने से दूर रखा जाएगा, इसे भक्ति नहीं करने दी जाएगी?

सन्तमत में चार से ज्यादा जन्म नहीं दिए जाते। जिन आत्माओं में उत्सुकता होती है, जब उनका समय आता है वे गुरु से मिलती हैं या गुरु खुद ही ऐसी आत्मा के सामने आकर खड़ा हो जाता है। संसार में आने से पहले सब कुछ तय होता है।

प्यारेयो, कई बार हमें बहुत शर्म महसूस होती है, शादी–शुदा होते हुए भी हम इस दुनिया में बह जाते हैं, व्याभिचार करते हैं और कहते हैं कि हमने मन के कहने पर यह भूल की। यह गरीब आत्मा जो आपके सामने बैठी है यह जिस जगह पैदा हुई वहाँ सभी दुनियावी सुविधाएं थी। यह

गरीब आत्मा जब जवान हुई तो इसके पास भी मन था। मेरे माता–पिता ने शादी के लिए मुझे बहुत जोर दिया लेकिन जब मैंने शादी के लिए मना किया तो उन्होंने कहा, ''अगर तुम शादी नहीं करोगे तो हम कुएँ में छलाँग लगाकर अपनी जान दे देंगे।'' मैं उनका दिल नहीं तोड़ना चाहता था, मैं उनके सामने रोया और मैंने उन्हें समझाया कि मैं शादी नहीं करना चाहता।

अपने प्यारे गुरु के मिलने से पहले मुझे कोई ऐसा आदमी नहीं मिला था जिसने मेरे प्यारे गुरु की बड़ाई या निन्दा की हो। मैं अपने गुरु के बारे में कुछ भी नहीं जानता था। जब मैं अपने गुरु से पहली बार मिला तो मैंने अपनी आँखों में पानी भरकर कहा, ''मैं माता के पेट से पैदा होने के बाद अभी तक कुँवारी लड़की जैसा पवित्र हूँ।''

प्यारेयो, परमात्मा की तलाश में मैं कई–कई दिनों तक जमीन पर सोया, कई–कई दिनों तक भूखा भी रहा। जब आपके दिल के अंदर विरह का दर्द होता है तो आप विषय–विकारों के बारे में कैसे सोच सकते हैं? आपकी यही इच्छा होती है कब आप अपने प्यारे से मिलेंगे।

सन् 1947 में जिस समय पाकिस्तान और हिन्दुस्तान की कश्मीर के लिए लड़ाई चल रही थी, उस समय हमारी आर्मी लड़ाई में शामिल थी। उस लड़ाई के दौरान मुझे अपने देश की सेवा करने का मौका मिला। हम जिस पहाड़ी इलाके में लड़ाई लड़ रहे थे वहाँ बहुत बर्फ पड़ती थी। लड़ाई में कामयाब होने पर हमारे अच्छे काम के बदले में सरकार ने इनाम के बदले में हमें छह महीने की छुट्टियाँ दी। शिमला की पहाड़ियों में जाने का मौका दिया कि समतल इलाके पटियाला में रहने की बजाय आर्मी के लोग कुछ समय ठंडी जगह पर बिताएं क्योंकि लड़ाई के दौरान हम बहुत बर्फीले पहाड़ो पर रहे थे।

प्यार, प्यार ही है। मैंने दूसरे लोगों की तरह पहाड़ो में रहकर छुट्टियां बिताने की बजाय समतल इलाके में रहना पसंद किया। मैंने जून के गर्म

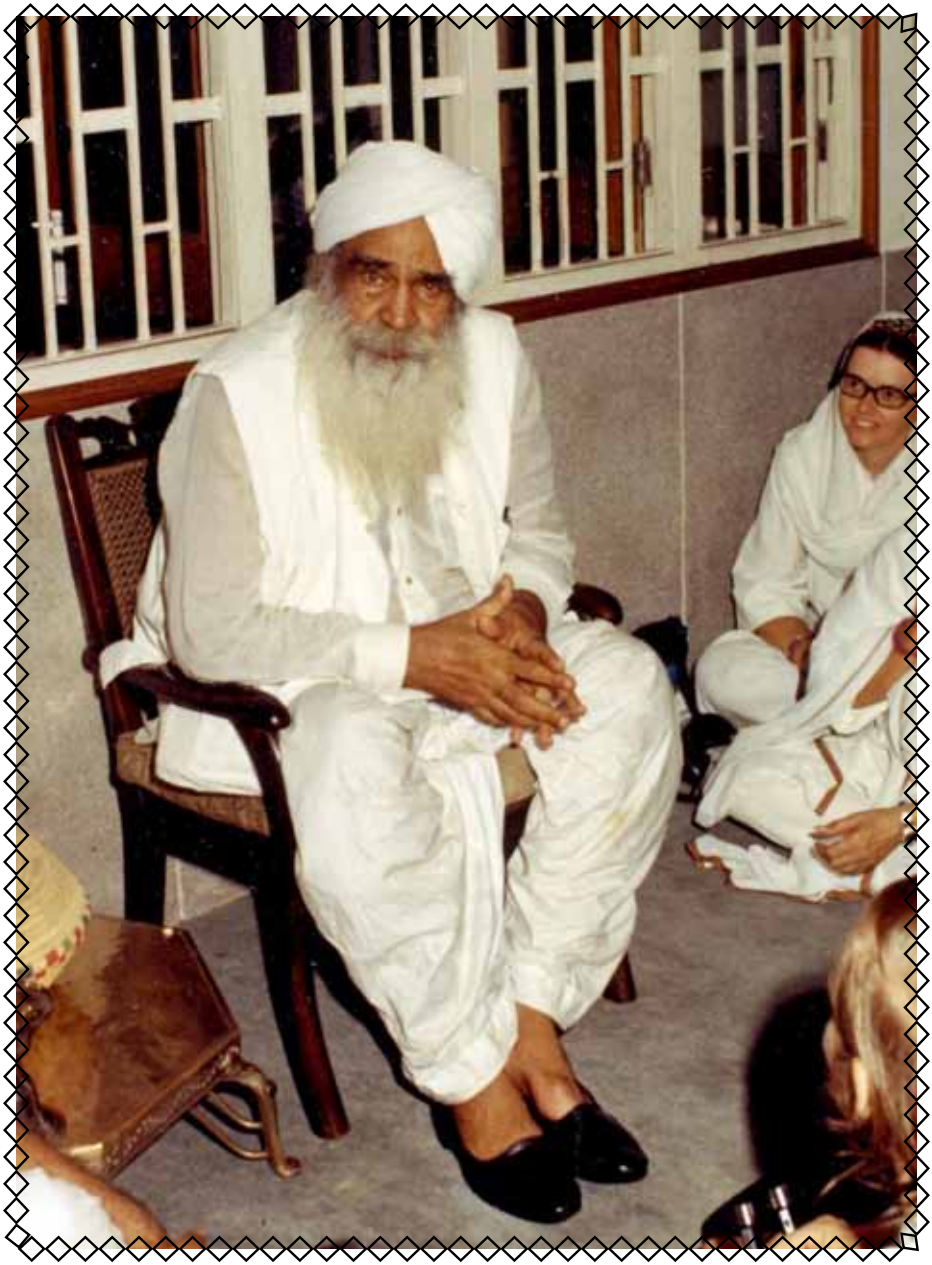

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज

महीने में धूनियां तपाई, यह धूनिया धन–पदार्थ इकट्ठा करने के लिए नहीं सिर्फ इसी आशा से तपाई थी कि शायद आग में बैठने से मुझे मेरा प्यारा मिल जाएगा। मैं जानता था कि शरीर तपाने से या भूखा–प्यासा रहने से किसी को परमात्मा नहीं मिलता। मैंने ये सब क्रियाएं इसलिए की कि कहीं मेरा मन मुझे रास्ते से भटका न दे और मैं दुनियावी सुखों में न खो जाऊं?

जब मेरा अपने प्यारे से मिलने का समय आया उस समय मैं अपने घर पर था। आपने खुद ही संदेश भेजा कि आज घर में ही रहे, मैं आ रहा हूँ। आप खुद ही मेरे पास आए क्योंकि मैं तो आपका नाम भी नहीं जानता था। आपने मेरे बचपन की प्यास बुझाई, मेरी इच्छा पूरी की। बचपन से ही मेरी इच्छा थी कि मेरा दूल्हा आए और मुझसे शादी करे।

मेरी माता ने मुझे बताया था कि आदमी की शादी आदमी के साथ नहीं औरत के साथ होती है। मेरी इच्छा थी कि मैं परमपिता परमात्मा के साथ शादी करूंगा लेकिन वह कौन है? यह मैं नहीं जानता था। यह सच है कि वह एक दूल्हे की तरह आया। वह मेरे लिए कपड़े लाया, मुझे अंगूठी पहनाई और मेरे साथ शादी की, यह उनकी खास दया थी। इस तरह उन्होंने मेरी इच्छा पूरी की, मेरी जन्मों–जन्मों की प्यास बुझाई।

हिन्दुस्तान में यह रिवाज है कि जब लड़की की शादी कर देते हैं वह अपने पति के घर जाती है, अब यह पति पर निर्भर है कि वह उसे किस नाम से बुलाए। इसमें औरत की अपनी कोई मर्जी नहीं होती वह सदा अपने पति की इच्छानुसार रहती है।

प्यारेयो, जरा सोचें एक आदमी जिसके लिए आपने पूरी जिंदगी इंतजार किया हो जिसे आप जानते भी न हों वह जब आपके पास आए और पहली ही मुलाकात में आपको बहुत मुश्किल इम्तिहान में डाल दे कि उस इम्तिहान को पास करने में दिल काँप जाए। मेरा प्यारा गुरु पहली बार जब मेरे पास आया तो उस समय मेरे पास बहुत जायदाद थी, जिस

पर बहुत बड़ा मकान बना हुआ था। उन्होंने वह सारा मकान अच्छी तरह देखा और मुझसे कहा, ''मेरे रहते हुए ही तुम यह जगह छोड़ दो और यहाँ से कोई वस्तु न उठाओ।''

जिस तरह पप्पू यहाँ (साँपला) में बहुत बड़े–बड़े मकान बनवा रहा है जिसमें से कुछ बन गए हैं और कुछ बन रहे हैं इसी तरह उस जगह कुछ मकान बन गए थे और कुछ बन रहे थे। अगर मैं पप्पू से कहूँ कि इस जगह (साँपला) को छोड़ दे तो इसे दिल का दौरा पड़ जाएगा जबकि मैं पप्पू के साथ रहता हूँ लेकिन मैं तो अपने गुरु को पहले से जानता भी नहीं था।

जब मेरे गुरुदेव ने मुझे वह जगह और वहाँ रखा हुआ सब कुछ छोड़ने के लिए कहा उस समय मेरे सिर पर साफा बंधा हुआ था। जब मैंने पगड़ी पहननी चाही तो मेरे गुरु ने पगड़ी उठाने के लिए भी मना किया। मैंने उसी समय वह जगह छोड़ दी और उसी दिन शाम को अपने गुरु के हुक्म से 16 पी.एस. चला गया जहाँ पर मैं अब रह रहा हूँ।

मेरे एक नजदीकी प्रेमी ने एक बार मुझे सलाह दी कि हमें उस जगह से जाकर बर्तन ले आने चाहिए। मैंने उस प्रेमी से नाराज होकर कहा, ''गुरु ने जो कर दिया वह ठीक है, क्या तुम्हें यहाँ खाना बर्तनों में नहीं मिलता?'' मेरे एक रिश्तेदार ने जायदाद छोड़ने पर मुझसे विरोध करते हुए कहा, ''तुम अपनी जायदाद किस तरह छोड़ सकते हो?'' मैंने चुटकी बजाते हुए कहा, ''बिल्कुल इसी तरह क्योंकि मुझे जायदाद के साथ नहीं अपने गुरु के साथ लगाव है।''

आमतौर पर गुरु ने अगर अपने रहने के लिए झोपड़ी भी बनाई होती है तो गुरु के रहते ही हम उस जगह की तरफ देखते हैं और इंतजार करते हैं कि गुरु के जाने के बाद हम उस जगह के मालिक बन जाएं। गुरु के जाने के बाद हम लोग आपस में लड़ते हैं उस संपत्ति पर कब्जा करने के लिए कोर्ट–कचहरी तक चले जाते हैं।

अगर आपने गुरु के लिए अपना सब कुछ त्याग कर दिया है तो ही आप **गुरु के बच्चे** बन सकते हैं। आप ऐसा तभी कर सकते हैं जब आप चतुराई छोड़ देंगे और एक बच्चे की तरह मासूम बन जाएंगे। अगर बच्चे के हाथ से खिलौना छीन लें तो वह कुछ नहीं कर सकता। जिस गुरु ने आपको सब कुछ दिया है अगर वह वापिस ले ले यह आप तभी बर्दाश्त कर सकते हैं जब आपमें चतुराई न हो, आप मासूम हों। **गुरु का बच्चा** बनना बहुत मुश्किल है।

मेरे प्यारे गुरु ने कभी मुझे अपने सामने बैठकर सतसंग नहीं सुनने दिया, वे सदा ही मुझे अपने साथ बिठाया करते थे। मुझे कई बार उनके साथ रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। मुझे कई बार उनके साथ खाना खाने व उनकी गोद में बैठने का मौका मिला है जिस तरह एक बच्चा अपने पिता की गोद में बैठता है और मुझे कई बार उनकी दाढ़ी से खेलने का मौका भी मिला है। जब मैं अपने गुरु के साथ होता उस समय मैं आधा पागल हुआ करता था, मैं नहीं जानता था कि मैं क्या कर रहा हूँ?

प्यारेयो, बच्चा दोस्त और दुश्मन में फर्क नहीं समझता, उसके लिए रस्सी और साँप एक बराबर होते हैं। वह पूरी तरह से अपने माता–पिता की इच्छा के अधीन होता है और माता–पिता पर विश्वास करता है। हमारे गुरु के दिल में हजारों दुनियावी माता–पिता से भी ज्यादा प्यार है अगर हम खुद को पूरी तरह से गुरु की इच्छा के अधीन कर दें तो हम **गुरु के बच्चे** बन जाते हैं।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जब कोई **गुरु का बच्चा** बन जाता है तो गुरु को भी कुछ देना पड़ता है। ऐसे बच्चे के लिए गुरु सच्चखंड से दात लेकर आते हैं, उस दात को ब्रह्म और पारब्रह्म भी नहीं रोक सकते। यहाँ तक की पहली मंजिल का मालिक जोत–निरंजन भी

नहीं रोक सकता।'' **गुरु का बच्चा** बनना बहुत ऊँची चीज है। मैं तो यह कहूँगा कि भाग्यशाली जीव ही गुरु का बच्चा बन सकते हैं।

एक प्रेमी: *गुरु के पास माफी है लेकिन सन्त कहते हैं कि कुछ ऐसे भी पाप हैं जिनके लिए माफी नहीं दी जा सकती जैसे आत्महत्या करने वाले जीव को माफ नहीं किया जाता?*

बाबा जी: हमें यह जीवन परमपिता परमात्मा ने अपनी इच्छा के मुताबिक दिया है। हमें यह शरीर पिछले जन्मों के कर्मों के हिसाब से मिला है। अगर हम इस जन्म में गूँगे, बहरे या अंधे हैं चाहे हमारी बुद्धि अच्छी है या बुरी है चाहे हमारे शरीर में कोई कमी है या हमारा शरीर अच्छा और सुंदर है तो यह सब हमारे अपने ही कर्म हैं।

परमात्मा ने जन्म-मृत्यु का फैसला अपने हाथ में रखा है, परमात्मा ही यह फैसला करता है कि कितनी देर आत्मा को दुनिया में रखना है। जब हम आत्महत्या के बारे में सोचते हैं तो हम परमपिता परमात्मा की इच्छा को स्वीकार नहीं करते। सभी वेद-शास्त्र और धार्मिक ग्रंथों का यह मत है कि आत्महत्या करने वाले को माफी नहीं दी जा सकती, आत्महत्या करने वाला बहुत बड़ा पापी है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''पाप के भी दर्जे होते हैं लेकिन आत्महत्या करना सबसे बड़ा पाप है। आत्महत्या करने वाले को परमात्मा माफ नहीं करता। आत्महत्या करने वाले को परमात्मा उल्टा लटका देता है, उसे वहाँ भी बहुत सी सजाएं दी जाती हैं।''

आप जानते हैं इस दुनिया में भी अगर कोई अपना जीवन खत्म करना चाहता है तो उसे बहुत सख्त सजा भुगतनी पड़ती है, जेल जाना पड़ता है। जब इस दुनिया का कानून आत्महत्या की कोशिश करने वाले को माफ नहीं करता तो परमात्मा का कानून भी नहीं बदलता। आत्मा की कमजोरी के कारण हम आत्महत्या के बारे में सोचते हैं, आत्महत्या करने

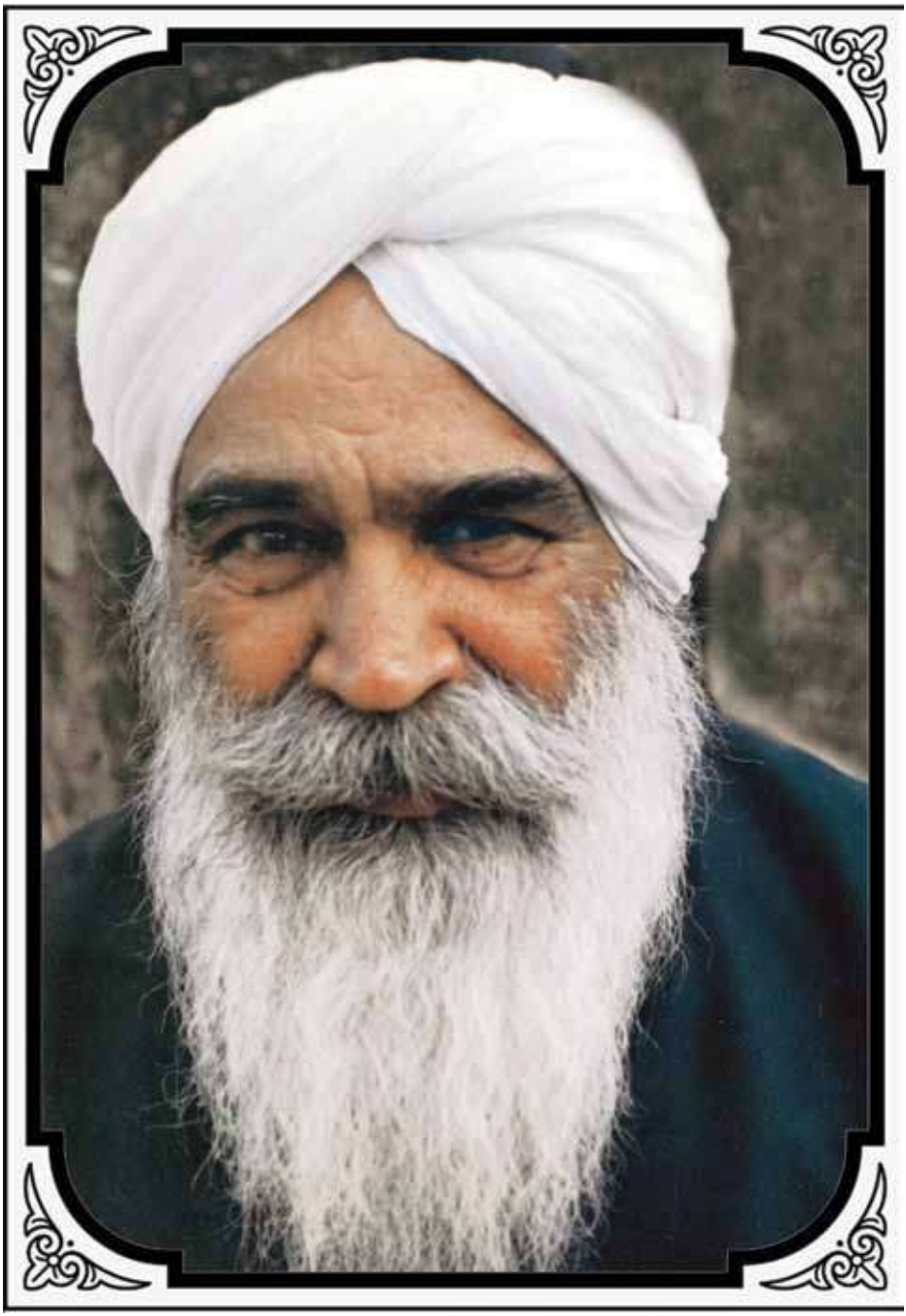

से किसी मुसीबत का अंत नहीं होता। बहुत से लोग दुनियावी जिम्मेदारियों से घबराकर आत्महत्या करते हैं क्योंकि उनका मन कमजोर होता है और बहुत से लोग पागलपन के कारण आत्महत्या करते हैं।

***एक प्रेमी**: क्या आपने बाबा सोमनाथ या मस्ताना जी के साथ कुछ समय बिताया है? अगर हाँ तो कृपया आप हमें उनके बारे में कुछ बताएं?*

बाबा जी: बाबा सोमनाथ के साथ मेरी एक बहुत छोटी सी मुलाकात हुई है। आप बाबा बिशनदास जी के बारे में जानते हैं कि वह मेरे पहले गुरु थे, मुझे उनसे 'दो–शब्द' का भेद मिला था। बाबा बिशनदास जी ने मुझसे कहा था, ''इसके आगे कुछ और भी है अगर तुम्हें कोई ऐसा गुरु मिले जो इससे ऊपर दे सकता हो तो मुझे भी ऐसे गुरु के पास लेकर चलना अगर मुझे कोई ऐसा मिलेगा तो मैं तुम्हें उसके पास ले जाऊँगा।''

महाराज कृपाल के मिलने से पहले मुझे महाराज सावन सिंह जी के दर्शनों का मौका मिला। जब मैं महाराज सावन सिंह जी से मिला तो मुझे तसल्ली हो गई तब मैं बाबा बिशनदास जी को महाराज सावन सिंह जी के पास लेकर गया। बाबा बिशनदास जी ने महाराज सावन सिंह जी को मेरे बारे में बताया कि परमात्मा की खोज में मैंने किस तरह धूनियाँ तपाई हैं और कई किस्म के अभ्यास किए हैं।

उस समय महाराज सावन सिंह जी ने कहा, ''यहाँ मेरा एक शिष्य है जिसने परमात्मा की खोज में इस तरह के बहुत से अभ्यास किए हुए हैं, वह जब यहाँ आया था तब उसकी जटाएं थी यहाँ ब्यास में आकर उसने बाल कटवाए हैं।'' तब बाबा सोमनाथ को बुलवाया गया उस समय हम महाराज सावन सिंह जी के सामने मिले थे।

मुझे कई बार महाराज सावन सिंह जी के सतसंग के दौरान मस्ताना जी के साथ समय बिताने का मौका मिला है। वे मेरे बहुत अच्छे दोस्त थे, हमारा एक–दूसरे के प्रति बहुत प्रेम था। मस्ताना जी एक सच्चे प्रेमी

थे और साँस–साँस के साथ अपने गुरु सावन को याद करते थे। आप मस्ताना जी के लिखे हुए जो भजन गाते हैं वह मेरे ही लिखे हुए हैं। मस्ताना जी के चोला छोड़ने के बाद किसी और आदमी ने उन भजनों के अंत में अपना नाम लिखना शुरु कर दिया था कि ये भजन उसके लिखे हुए हैं जोकि मुझे अच्छा नहीं लगा इसलिए हमने मस्ताना जी का नाम लिखा है।

मस्ताना जी

मस्ताना जी अपने पैरों में घुंघरूओं की पाजेब पहनकर महाराज सावन सिंह जी के सामने नाचते थे। उन दिनों मुझे भी नाचने का शौक था, मैंने उसी भाव से यह भजन लिखा थाः

नाच रे मन नाच रे तू सतगुरु आगे नाच रे
धन सतगुरु का बोलिए, तेरा कटे जन्म का पाप रे

मैंने महाराज सावन सिंह जी के सामने खड़े होकर कहा, ''जिस तरह रांझा कहा करता था कि जो लोग फकीर बनना चाहते हैं वे मेरे साथ आ जाएं। न मेरी शादी हुई है, न मेरी शादी होगी और दुनिया में ऐसा कोई नहीं जो मेरे मरने पर रोएगा।''

जिस तरह महाराज कृपाल सिंह जी ने मुझे जमीन के नीचे गुफा में भजन–अभ्यास के लिए बिठाया था उसी तरह महाराज सावन सिंह ने भी मस्ताना जी के लिए गुफा बनाकर उनसे भजन–अभ्यास करवाया। मुझे भी उस गुफा में भजन–अभ्यास करने का मौका मिला है।

जब मस्ताना जी ने नामदान देना शुरु किया उस समय उनकी बहुत संगत थी लेकिन उनका मेरे साथ वैसा ही प्यार था जैसा महाराज सावन

सिंह जी के दरबार में हुआ करता था। मैं जब भी मस्ताना जी से मिलने जाता तब वह सारी संगत के सामने मुझसे बुलवाते कि बताओ, महाराज सावन सिंह जी कैसे थे? तब मैं सारी संगत के सामने महाराज सावन की सुंदरता और यश के बारे में बताता जैसा मैंने उन्हें देखा था।

महाराज सावन सिंह बहुत खूबसूरत थे। वे एक सभ्य गुरु थे। उनकी घड़ी में सोने की चेन लगी हुई थी। वे साफ-सुथरे कपड़े पहनते थे, कभी किसी ने उनके कपड़ो पर कोई दाग लगा हुआ नहीं देखा था। वे जब हँसते तो ऐसा लगता था कि उनका सारा शरीर ही हँस रहा हैं। वे इतने सुदंर थे कि परियां भी उनकी पूजा करती थी। उनके बात करने का तरीका ऐसा था कि वे बात किसी से करते और दूसरा सुनने वाला काँपता था।

मस्ताना जी कहा करते थे, ''आप यहाँ जो कुछ देख रहे हैं यह सब महाराज सावन की दया है।'' मस्ताना जी लोगों को धन-पदार्थ बाँटा करते थे। जिस दिन वह ऐसा करते सुबह से लेकर शाम तक पैसे बाँटते रहते। कई बार सरकार ने यह जानने की कोशिश की कि पैसे कहाँ से आते हैं। एक बार सरकार ने उन्हें जेल में भी डाला लेकिन यह मालूम नहीं हो सका कि बाँटने के लिए पैसे कहाँ से आते हैं। आप यही कहते थे, ''यह सब महाराज सावन की दया है।''

उन्होंने एक जगह यह भी लिखा हुआ था अगर किसी ने मस्ताना को एक रूपया दिया है तो वह उसके बदले में हजार रूपये ले सकता है। वे हमेशा फटे-पुराने कपड़े पहनते थे। मैंने देखा है कि वे जूते भी टूटे हुए पहनते थे। आप फटे हुए कपड़े और जूते दिखाकर कहते, ''यह सावन शाह का खेल है, गरीब मस्ताना के पास फटे कपड़े और इन जूतों के सिवाय कुछ नहीं।''

एक दिन मस्ताना जी ने मुझसे कहा, ''मुझ पर महाराज सावन की बख्शिश है लेकिन जो ताकत तेरे पास आएगी उसने बहुत कमाई की है।

सावन खुदा है और वह खुदा का बेटा है। उसने इतनी कमाई की है अगर वह अपने दोनों हाथ खड़े कर दे तो आग उगलती हुई तोपें भी रूक जाएंगी। वक्त आने पर वह ताकत तुम्हारे घर आएगी तुमने उसका आदर करना है।''

मस्ताना जी का महाराज कृपाल से भी बहुत प्यार था, उनकी संगत भी महाराज कृपाल के साथ काफी प्यार करती रही है। मस्ताना जी आमतौर पर सावन सिंह जी महाराज के नामलेवाओं से खुश नहीं थे। वे उनसे कहते, ''सावन के रूप में आपको परमात्मा मिला है लेकिन आपने उसकी कद्र नहीं की।'' सावन शाह का रूप मस्ताना जी के तन–मन के अंदर इतना गहरा समाया हुआ था कि आप उसे भूल नहीं सकते थे। जैसा कि मैंने अपने एक भजन में लिखा हैः

जद दा सावन नज़री आया, पलकां विच लुकाया।
अजे तक ना भुल ही सकया, ज्यों सावन मुस्काया।
सावन प्यारा सावन सोहणा, सावन दिलबर जानी।
हसदा हसदा दे गया मैंनू कृपाल अमर निशानी।।

प्यारेयो, इस गरीब आत्मा के अंदर भी सावन का स्वरूप ऐसे बसा हुआ है कि मैं उसे निकाल नहीं सकता। मैंने कभी अपने प्यारे गुरु कृपाल और महाराज सावन सिंह जी में कोई फर्क महसूस नहीं किया, मैं उसी स्वरूप में उनके दर्शन करता रहा हूँ। उसने हँसते–हँसते कृपाल के रूप में मुझे अमर निशानी दी है।

***

धन्य अजायब

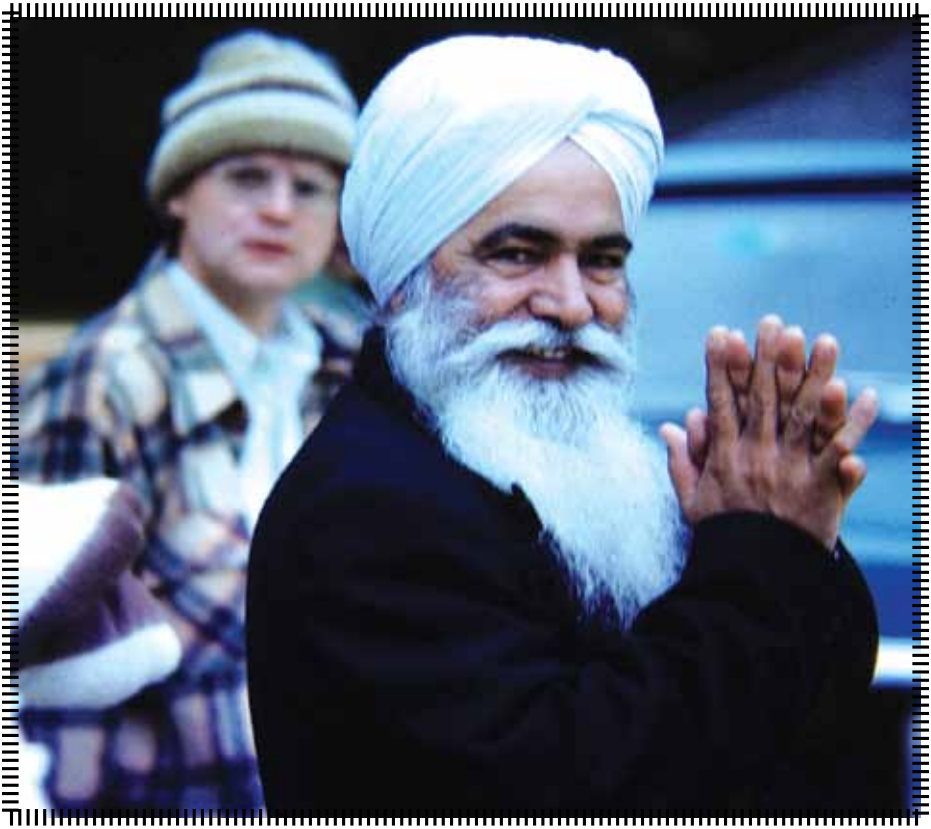

सतसंग के कार्यक्रमों का विवरण :–

1	01 फरवरी–05 फरवरी 2023	बुधवार से रविवार	16 पी.एस. आश्रम
2	03 मार्च–05 मार्च 2023	शुक्रवार से रविवार	16 पी.एस. आश्रम
3	17 मार्च–19 मार्च 2023	शुक्रवार से रविवार	पठानकोट (पंजाब)
4	31 मार्च–02 अप्रेल 2023	शुक्रवार से रविवार	16 पी.एस. आश्रम

भजन माला - 2022

(नए भजन)

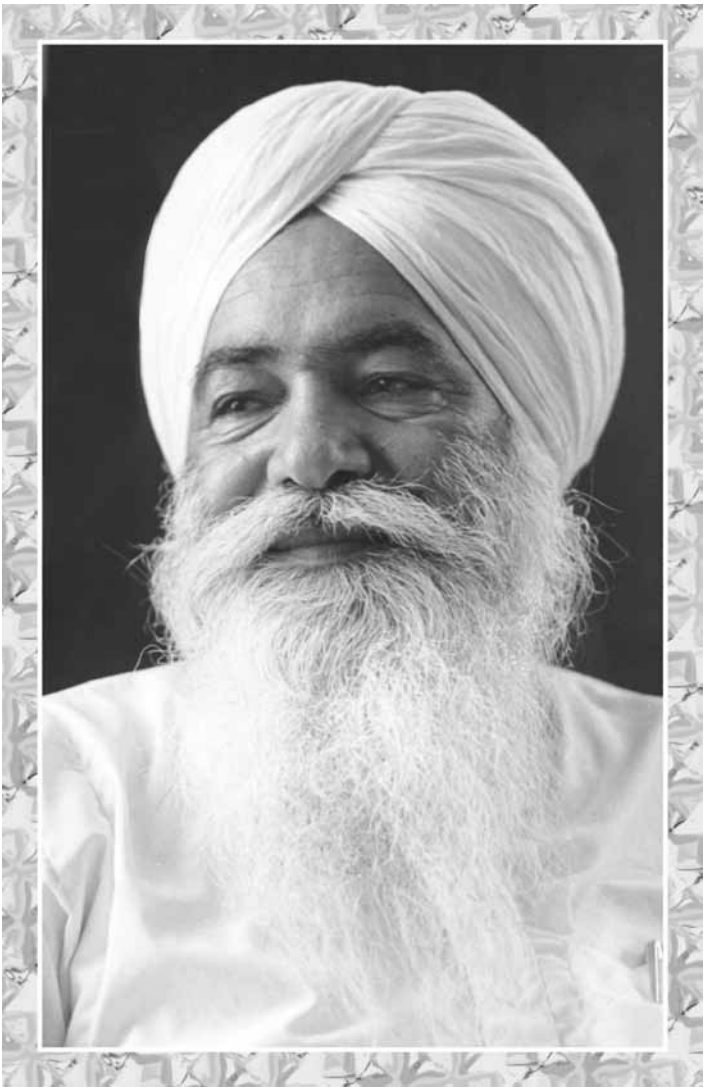

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

की कहां ते किस मुँह नाल आखां

की कहां ते किस मुंह नाल आखां
बक्श दे सतगुरु अैब मेरे x 2
की कहां ते किस.....

1 किथों शुरू करां की आखां, समझ ना आवे मैनूं जी,
बेहिसाब ने अवगुण मेरे, किंझ सुणावां तैनूं जी x 2
कैंदया दाता लजया आवे x 2 किंझ आख सुणावां तैनूं जी,
की कहां ते किस.....

2 भुलया हां मैं जीव निमाणा, चढ़ गया मन दे हत्थां विच,
भुलया तेरा सिमरन दाता, पै गया मंदड़े कम्मां विच x 2
तकां हुण किस मुंह नाल दाता x 2 तेरियां सोहणियां अखां विच,
की कहां ते किस.....

3 हर इक अैब मेरे विच दाता, लम्बी लिस्ट गुनाहां दी,
फोलीं नां कोई वरका इस चों, हथ जोड़ कुरलावां जी x 2
कज्ज लवीं तूं परदा दाता x 2 जिवें अज तक कज्जया जी,
की कहां ते किस.....

4 पाड़दे वरके दाता मेरे, कीते खोटेयां कर्मां दे,
दया बणी रहे बस दाता, मेरे जेहे बेशर्मां ते x 2
बक्श दे बक्शणहार कहावें x 2 कोई नमक ना छिड़के जख्मां ते,
की कहां ते किस.....

5 अजायब सतगुरु दाता तूं हैं, तूं ही लाज रखावेंगा,
अैबां भरे 'गुरमेल' पापी नूं, तूं ही चरणी लावेंगा x 2
चरणी डिगयां पापीयां नूं दाता x 2 तूं ही पार लगावेंगा,
की कहां ते किस.....

मुद्दत होई यार विछड़ेयां पा फेरा

मुद्दत होई यार विछड़ेयां पा फेरा,
रूल गए विच संसार विछड़ेयां पा फेरा,

1 होई कोंण खुनामी, जो तूं मुड़ेया इ ना x 2
तरले ओसियां पाए, तूं ते सुणेया इ ना,
आजा आजा आजा x 2 मुड़ेया पा फेरा,
मुद्दत होई यार .....

2 लंघदे ने दिन साडे, तरले पोंदेयां दे x 2
साह जे दाता चलदे, साडे जिओं देयां दे,
करे यतन बहुत मैं दाता x 2 बझदा ना ज़ेरा,
मुद्दत होई यार .....

3 मन वी दागी, तन वी दागी हो गया है x 2
समझ नी ओंदी दाता, की की हो गया है,
बणके आजा वैद्य x 2 जे धरजां मैं ज़ेरा,
मुद्दत होई यार .....

4 हिम्मता टुटियां हौंसले टुटे, तन वी मेरा थक गया x 2
सुण सुण गल्लां ताने फिकरे, मन वी मेरा अक्क गया,
दिसदा ना कोई चारे पासे x 2 पै गया जिवें है नेरा,
मुद्दत होई यार .....

5 रब सी मेरा रब है मेरा, सब कुछ तूं ही है मेरा x 2
देख ना अवगुण अजायब जी, मैं तेरा बस मैं तेरा,
'गुरमेल' दे कोले आके x 2, बैह जा इक वेरां
मुद्दत होई यार .....

ऐस दिल नूं मैं किंझ समझावां जी

ऐस दिल नूं मैं किंझ समझावां जी
उम्रां तां लंघ चलियां दाता जी उम्रां तां लंघ चलियां.....

1 दु:ख विछोड़े दा बहुत सतोंदा वे x 2
सोहणेया दर्श बिना चैन नहीं औंदा वे x 2
बह जा सामणें तूं इक वारी आके जी उम्रां तां लंघ चलियां.....

2 दर्द विछोड़ा अज किने साल होए वे x 2
जांणदा ऐं तेरे बाजों किना अस्सी रोए वे x 2
हुण हिम्मतां ने तेरे बाजों हारियां जी उम्रां तां लंघ चलियां.....

3 तेरे ही विछोड़े वाली अग्ग मैं तां सेकदी x 2
बैठ तेरे दर उत्ते तेरा ही राह देखदी x 2
कीते वादेयां नूं आप निभा जा जी उम्रां तां लंघ चलियां.....

4 मसां मसां जिंदड़ी तें प्यार विच रंगी वे x 2
जापदा है जन्मा तों तेरे नाल मंगी वे x 2
बण सजण तू डोली मेरी चा जी उम्रां तां लंघ चलियां.....

5 समझ यतीम दाता तूं ही गल लाया सी x 2
प्यार वाला बीज दाता आप तूं लगाया सी x 2
दर्श तेरे बिना रूह मुरझावे जी उम्रां तां लंघ चलियां.....

6 प्यार दा पुजारी दाता अजायब जी सदावे तूं x 2
सागर प्यार दा कृपाल जिनूं गावें तूं x 2
ओसे प्यार नूं 'गुरमेल' कुरलावे जी उम्रां तां लंघ चलियां.....

दु:ख कीनूं दस्सां

दु:ख कीनूं दस्सां, वे मैं दु:ख कीनूं दस्सां
दु:ख कीनूं दस्सां, दिल वाले दाता मेरेया
दु:ख कीनूं दस्सां, वे मैं दु:ख कीनूं दस्सां

1 भरया प्याला पापां गमां नाल दातेया
सुणदा नी कोई तेरे बाजों दु:ख दातेया x 2
करां अरजोई x 2 तेरे ताई मेरे दातेया
दु:ख कीनूं दस्सां, दिल वाले दाता.....

2 जीव हां निमाणा, कोई शहंशाह तां हां नहीं
छोटी जेही औकात मेरी, समझदा वी हां नहीं x 2
छड दित्ता जित्थे x 2 ऐह फानी संसार आ
दु:ख कीनूं दस्सां, दिल वाले दाता.....

3 संसार विच दाता, जदों तूं विसारेया
दु:खां दे खजाने भरे, मेरे कोल दातेया x 2
झाक इक वारी x 2 मेरे वल मेरे दातेया
दु:ख कीनूं दस्सां, दिल वाले दाता.....

4 खुशी सुख हासा, मौज मस्ती की हुंदे ने,
मंदभागे जीव, काल नगरी च रोंदे ने x 2
जख्मी है दिल x 2 तन रोगां ने है खा लया
दु:ख कीनूं दस्सां, दिल वाले दाता.....

5 सुण लै पुकार, अजायब कृपाल दे दुलारेया,
ओही हां मैं जीव, जिनूं 'गुरमेल' सी पुकारेया x 2
रख लै तूं रख x 2 पत्त मेरी ओ दातारेया
दु:ख कीनूं दस्सां, दिल वाले दाता.....

दाता तेरियां रूहां तेरे दर आ गईयां

दाता तेरियां रूहा तेरे दर आ गईयां x 2
बख्श देयो मेहर करके दु:खड़े असी सह रहियां
दाता तेरियां रूहां तेरे दर आ गईयां x 2

1 आजा कोले बैठ असाडे दिल दियां गल्लां करिए
दु:ख–सुख दर्द सुनेहे सजणा तेरे कोले कहिऐ x 2
बात नी साडी पुछदा कोई, तेरे दर हुण आ गईया
दाता तेरियां रूहां तेरे दर आ गईयां x 2

2 वक्त गवाया गल्ली बाती गफलत दे विच आके
पाप कमाए बहुते सारे मन दे कहणे आके x 2
बहुत हो गया काल पसारा, तेरे चरणी पे गईयां
दाता तेरियां रूहां तेरे दर आ गईयां x 2

3 दु:ख वी है ते गिला वी दाता तेरे विछोड़े ताईं
आ ईक वारी गल नाल ला ले छड्ड न मुड़ तूं जाईं x 2
रो लए सारी उम्र बथेरा, वापस घर नूं आ गईयां
दाता तेरियां रूहां तेरे दर आ गईयां x 2

4 कहे 'अजायब' सुण कृपाल प्यारे तेरे वारे जाईऐ
तक्क ले साडे वल्ल प्यारे पार उतारे पाईऐ x 2
बख्श दे दाता अवगुण साडे, सी माड़े कर्मीं पे गईयां
दाता तेरियां रूहां तेरे दर आ गईयां x 2

दर तेरे ते दस्तक दित्ती दरवाजा ते खोल

दर तेरे ते दस्तक दित्ती दरवाजा ते खोल
जी आयां जे आख नी सकदा अलविदा ही बोल x 2

1 तू ही मेरी झोली दे विच खैर प्यार दी पाई
प्यार दी तेरी ईक बूँद मेरी सगली होंद रोशनाई, x 2
आप ही हुण इस रोशन रूह नूं x 2 पैरां हेठ न रोल
जी आयां जे आख नी सकदा अलविदा ही बोल x 2

2 तन वी तेरा देणदार है रूह वी है करजाई,
तन हुण मेरा रोगां खादा रूह वी फिरे घबराई x 2
हुण इस मन दे झखड़ा अग्गे x 2 रह न सकां अडोल
जी आयां जे आख नी सकदा अलविदा ही बोल x 2

3 अजे वी चेते दे तल उत्ते तेरा ही परछावां
की होया जे बदल गया है तेरा वे सिरनावां x 2
किद्दर जावां किद्दर लब्बां x 2 फिरदी हां अनभोल
जी आयां जे आख नी सकदा अलविदा ही बोल x 2

4 अजे वी ख्वाबां दे विच जगदे याद तेरी दे दीवे,
साह तेरे दी धड़कन अजे वी हिक मेरी विच जीवे x 2
राह तक तक मैं ओसियां पावां x 2 काग बुलावा कोल,
जी आयां जे आख नी सकदा अलविदा ही बोल x 2

5 'अजायब' मन दी मिट्टी उत्ते उकरे रोसे हासे
कन्ना दे विच अजे वी गूंजण कृपाल दे बोल पतासे x 2
मैं सुहागण तेरा राह वे तकदी x 2 हुण आ दरवाजा खोल
जी आयां जे आख नी सकदा अलविदा ही बोल
दर तेरे ते दस्तक दित्ती दरवाजा ते खोल
जी आयां जे आख नी सकदा अलविदा ही बोल

मन मेरे क्यों ना सुने गुरु की बात

मन मेरे क्यों ना सुने गुरु की बात x 2
क्यों ना सुने गुरु की बात, x 2
मन मेरे क्यों ना.....

1 सारा दिन, अहंकार में रहता
गुरु का सिमरन, तू नहीं रटता x 2
काहे का करे अहंकार,
मन मेरे क्यों ना.....

2 पाँच विषयों में, हर पल खेले
दिखावे के हैं, हम गुरु के चेले x 2
कुछ तो सोच विचार,
मन मेरे क्यों ना.....

3 बातों में सबसे, बड़ा सतसंगी,
सच में तो है, तू पाखंडी x 2
कभी तो बन मेरा यार,
मन मेरे क्यों ना.....

4 सेवा करे तो, मन की मत से,
मतलब नहीं, तोहे गुरु की संगत से x 2
खुश किसको करे मेरे यार,
मन मेरे क्यों ना.....

5 कबूल गुनाह, अपने गुरु के आगे,
डर के जिससे, काल भी भागे x 2
'अजायब', कर कृपाल से प्यार,
मन मेरे क्यों ना.....

RNI No - RAJHIN/2003/9899

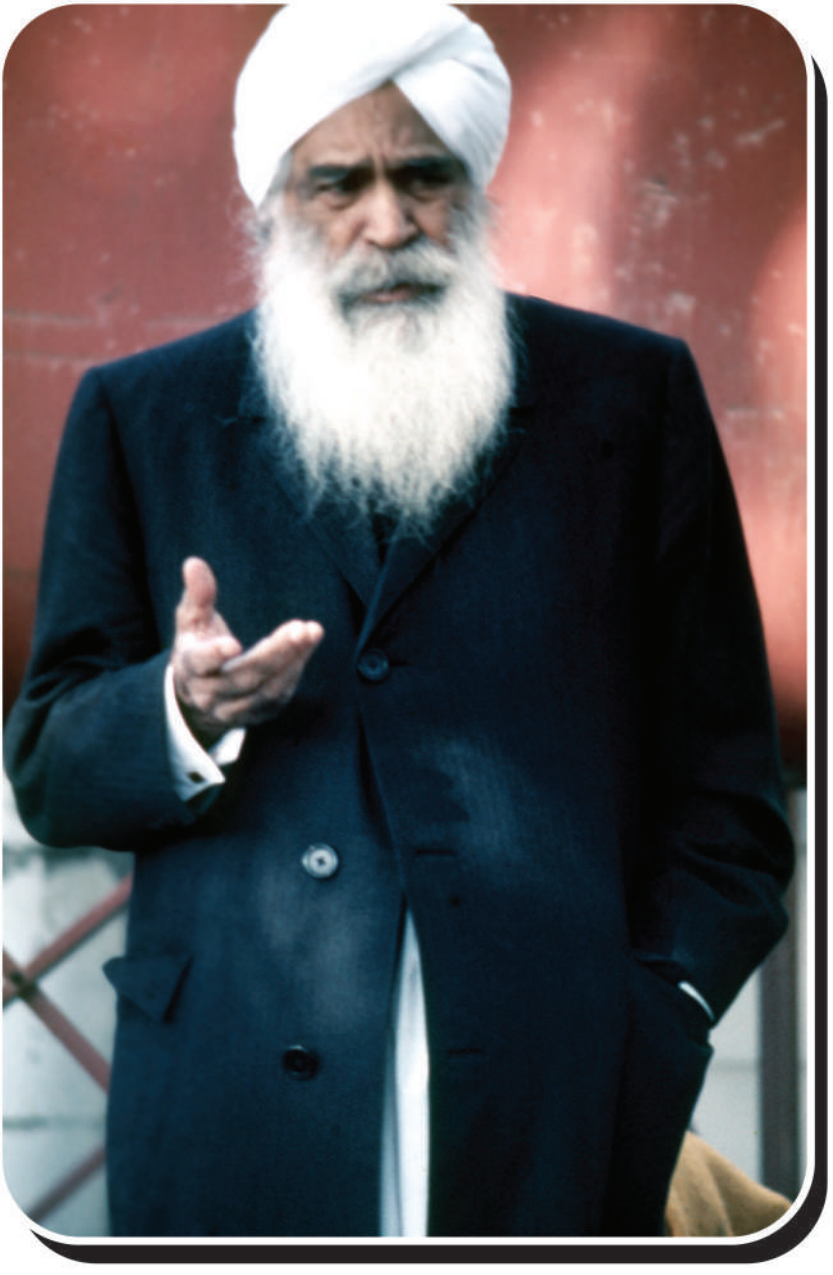

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज